मानव मन्दिर

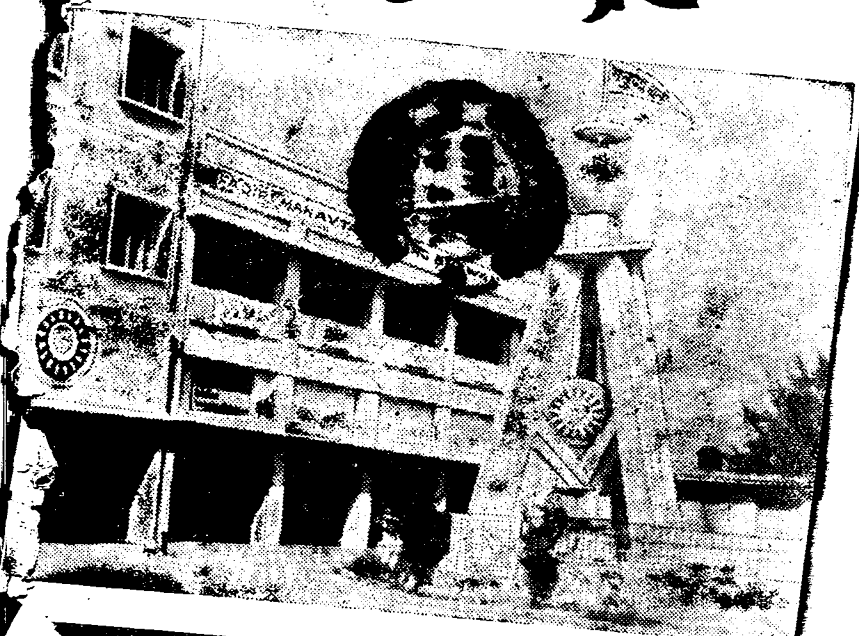

कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट
सुतेहरी रोड, होशियारपुर
द्वारा अमूल्य भेंट

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir. Hoshiarpur
Editor's Neme	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir or partners of shareholders, holding more than one Percent of the total capital	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Signature of Publisher

Dated : 10-7-84

Printed and Published by : Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press. Manavta Mandir Hoshirapur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

परम सन्त, परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज

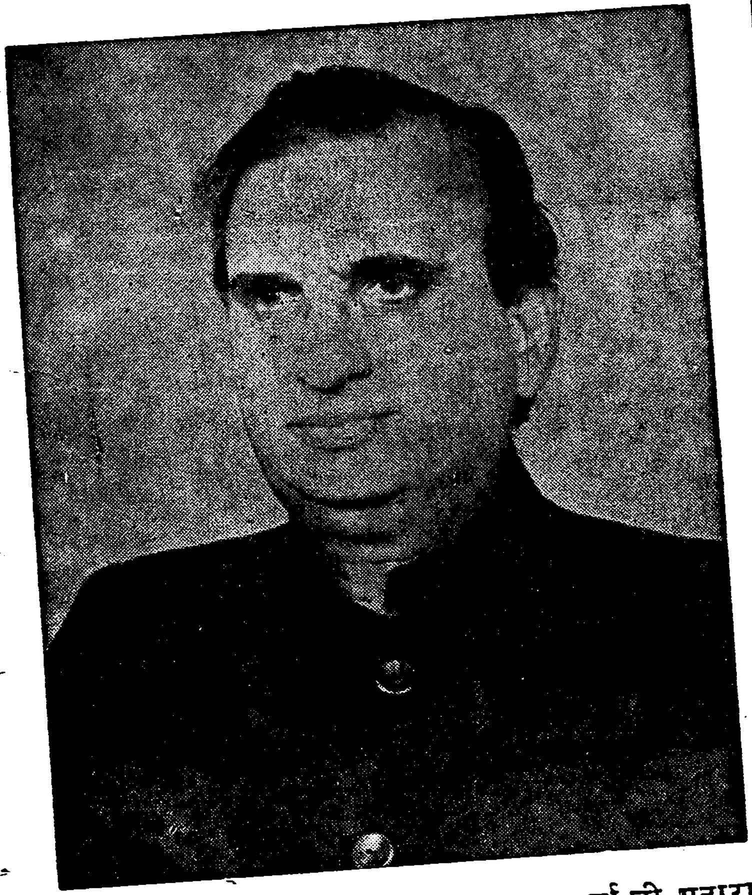

परम सन्त मानव दयाल डा० ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मासिक—

मानव मन्दिर

卐

OM

BE MAN

मनुष्य बनो

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

सत्संग परम सन्त परम दयाल
पंडित फ़कीरचन्द जी महाराज,

मानवता मन्दिर, होशियारपुर 10-8-80

भजन बिन जीवन है निष्फल ।।
मृग तृष्णा मरुदल भूमी, सार हीन निरजल ।।
काल करम माया बरियाई, फाँसे जीव निरबल ।।
संभल-संभल कर पग का धरना, कहीं न जाना फिसल ।।
भजन प्रताप बचे कोई प्रानी, शब्द के मारग चल ।।
राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ।।

दाता दयाल का एक यह शब्द मुझे हर वक्त याद रहता है :—

छिन-छिन उमर दिन राती, कभी सांझ कभी प्रभाती ।
माया मोह महाँ उत्पाती, इन से लगा लगन मत फ़कीरबा ।।

उमर गुज़र गई, जिन्दगी बदलती हुई चली आ रही है । अब यह शब्द पढ़ा कि भजन के बिना जीवन निष्फल है, मुझे नहीं पता भजन का अर्थ लिखने वाले ने क्या लिखा है, मैंने उमर गुज़ार दी भजन करते हुए, भजन कहते हैं

महत्वीयत को। जब से मुझको लोगों से यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्दर मदद करता है और मैं नहीं होता तब से मुझे यक़ीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्दर ख़्यालात, शक्लें, विचार, राम-कृष्ण, देवी या गुरु का रूप, जो कुछ भी पैदा होता है यह वास्तव में माया है, है नहीं! आप सोचो! मुझे यक़ीन होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? एक आदमी कहता है बाबा, तू आया, तूने यह कर दिया, यह कर दिया, अब मैं तो गया नहीं! तो जो कुछ उसके अन्दर फ़क़ीरचन्द प्रकट हुआ उसने कहा वह क्या था? वह उसका अपना ही मन था। जिस क़िस्म का संस्कार, ख़्याल व विचार उसके मन में पड़ा हुआ है वह उसके सामने फुरता है। तो जब मैं अब इस मन के ख़्यालात को छोड़ जाता हूँ, कोशिश करता हूँ छूट जायें, तो बाकी जो मेरी अपनी अवस्था रह जाती है, मेरा आत्मा है या जो मैं हूँ उस अवस्था में ठहरने का नाम भजन है, मेरी समझ में यह आया है। वहाँ क्या होता है? :—

मृग तृष्णा मरुदल भूमी, सार हीन निरजल।

जिस तरह से हिरण, चमकता तो रेता होता है, उस के पीछे दौड़ता है, समझ के कि यहाँ पानी है और भ्रम-भ्रम के मर जाता है, ऐसे ही हम लोग जो इस मन के चक्कर में आकर तरह-तरह के ख़्यालात दौड़ाते हैं, कभी कहीं, कभी कहीं, कभी कहीं, कभी कहीं, तो जब इन्सान को यह पता लग जाता है तो फिर वह मन के पीछे नहीं दौड़ता बल्कि अपने आप में ठहर जाता है, यह है जो मैंने समझा है।

आज हमारे यहाँ आये हुए हैं मानवता प्रचारक रत्न-चन्द जी महाराज। आप आगे आ जाइये! बैठ जाइये।

एक चीज में बुद्धि है। तुम कहोगे वृक्षों में बुद्धि है ? हाँ ! लाजवन्ती के पौधे को अगर आदमी हाथ लगाये वह सिकुड़ जाता है। उससे साबित हुआ कि वह उसकी जो निकलती है हवा, उसको वह पसन्द नहीं करता, सिकुड़ जाता है। एक होता है विवेक। विवेक केवल इन्सान में आता है जानवरों व हैवानों में नहीं आता। जिसमें विवेक नहीं, सच्ची समझ नहीं है तो वह यदि इन्सान है तो वह हैवान के बराबर है।

अब वह विवेक क्या है ? मैं वह कहना चाहता हूँ मुझे क्या पता लगा, कि इन्सान के संकल्प में और ख़्याल में बड़ी ताकत है, यह विवेक मुझ को मिला। कैसे मिला ? जिन्दगी के तजुर्बे से। रात को आप सो जाते हैं, स्वप्न में तुमको गुस्सा आता है, किसी को मुक्का मारते हो, तुम्हारा हाथ हिल जाता है कि नहीं ! स्वप्न में एक भयानक शक्ल देखते हो, तुम डर जाते हो, जबान बड़बड़ाती है कि नहीं ? औरतों का मुझे पता नहीं, तुम आदमी हो स्वप्न में अपने ख़्याल की एक औरत बना लेते हो, उससे भोग करते हो, तुम्हारा वीर्य निकल जाता है कि नहीं ? अच्छा ! मैं कहता हूँ मुझे विवेक कैसे आया, क्या विवेक आया ? मैं सोचता हूँ कि स्वप्न का ख्याल जो हमारे वश में नहीं है क्योंकि अगर तुम यह चाहो कि अपनी मर्जी के अनुसार स्वप्न देखो, तुम नहीं देख सकते, जब स्वप्न का ख़्याल तुम्हारे शरीर पर असर करता है तो जाग्रत में जो कुछ हम सोचते हैं, ख्याल करते हैं इसका असर क्यों न आयेगा ! यह मेरा विवेक है। इस विवेक के सहारे मैं क्या कोशिश करता हूँ ? कि जाग्रत में अपने मन में किसी से नफ़रत,

किसी से द्वेष, किसी से चारसौबीस, किसा से हेराफेरी किसी के साथ चालाकी, किसी के साथ गुस्सा न करूँ। जो व्यक्ति ऐसा करता है मैं उसको मानव समझता हूँ, उसको विवेक आ गया। मेरे ख़्याल में मैंने समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, मामूली से मामूली आदमी भी समझ सकता है।

दूसरी बात यह संसार मनोमय है, ख्याल की दुनिया है, संकल्प की दुनिया है, दूसरे मायनों में माया की दुनिया है। जिस क़िस्म का ख्याल किसी को दिया जाता है यदि वह उस ख्याल को क़बूल कर ले तो उसकी जिन्दगी बदल जाती है, जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति। उदाहरणतया सब से पहले आज़ादी का ख्याल लोकमान्य तिलक ने दिया। उसका जो ख्याल था, अब देखो! कितना फैला, कि स्वराज्य मिल गया, तो यह दुनिया ख्याल की है। इस-लिए हमारे दुःखों और मुसीबतों का कारण क्या है? कि हमारा ख्याल ठीक नहीं, हमारा विचार ठीक नहीं, जिस काम को हम करते हैं उसमें हमारी शुभ भावना नहीं है।

सबसे पहला ख्याल यह है कि हम सन्तान पैदा करते हैं, कोई घर ऐसा नहीं जिसको अपनी सन्तान से शिकायत नहीं, मुस्तसनियात (exceptions) तो होती रहती हैं। दुनिया में देखो! हर जगह नौजवान लड़के क्या करते हैं। क्यों? क्यों कि हम सब ख़ुदग़र्ज़ औलाद हैं। ख़ुदग़र्ज़ जानते हो ना! हम अपने स्वाद के लिए औरतों के पास जाते हैं, बच्चा पेट में आ जाता है तो हमने नीयतन तो नहीं बच्चा पैदा किया! इसलिए इस

जितना खेल है यह सब मन के चक्कर का है। इसवास्ते मानवता क्या है ? मानवता है ! पूरी समझ हासिल करना कि असलियत क्या है। असलियत यह है कि ऐ इन्सान ! सब कुछ तेरे अन्तर में है, तेरा अपना ही आप है, तू भ्रम में पड़कर दूसरों का मोहताज हुआ फिरता है, कभी औरत के पीछे दौड़ता है, कभी हकूमत के पीछे दौड़ता है, कभी दौलत के पीछे दौड़ता है, कभी किसी के पीछे दौड़ता है इसवास्ते यह भजन रखा गया है और सत्संग कराया जाता है ताकि जीव अपने मन के चक्कर में आकर दुःख-सुख न उठाये, अपने आप को अपने आप में ठहराये, अपने आप को अपने आप में ठहराने का नाम भजन है। यह मैंने समझा है, हो सकता है कि मैं गलती पर होऊँ, यह दावा करना कि मैंने जो कुछ समझा है यही final है यह मैं नहीं कहता।

मुझको विवेक कैसे हुआ ? मैंने मानवता की आवाज क्यों उठाई ? क्योंकि मैंने सोचा कि वगैर समझ के, वगैर विवेक के इन्सान की जिन्दगी बिलकुल बेफायदा है, वह धोखे खाता है, चक्कर खाता है। यही कबीर साहिब ने कहा है कि हम सब एक जगह टेकी हो गये हैं बंध गये हैं, पशु हैं हम, आदमी नहीं हैं। पशु वह है जो किसी खूंटे के साथ बंधा हुआ है :—

जग में मानुष कोई नहीं देखा ॥
जो देखा सो बैल बना है, बैल पशु के रूपा।
बैल समान फिरत नित डोले, क्या प्रजा क्या भूपा ॥

अब देखो ! कोई गुरु नानक साहिब का बैल है, कोई सिखइज़्म के साथ बंधा हुआ है, कोई राम और कृष्ण के साथ बंधा हुआ है, कोई फ़कीरचन्द के साथ बंधा हुआ है

और यदि ज़रा भी कोई ऐसी-वैसी बात होती है तो आपस में लड़ाई करते हैं। यह विवेक मुझको सिर्फ़ तुम लोगों से आया और कबीर साहिब उसकी पुष्टि करते हैं :—

कोई बैल गोरख का, कोई बैल शंकर का।
कोई बैल है रीति रस्म का, कोई मिट्टी कंकर का ॥

आजकल् क्या है? कोई बैल गांधी जी का बना हुआ है। माफ़ करना! आप लोग कांग्रेस वाले सारे गांधी जी के बैल बने हुए हैं, कोई नेहरू का बना हुआ है, कोई किसी का, कोई किसी का, सच्ची समझ किसी में नहीं है :—

कोई बैल है चार वेद का, कोई षट् दर्शन का।
अपनी किसी ने खबर न पाई, देखा न मुख दर्पण का॥
पंथ के बैल पंथ में डोलें, भेख भिखारी लाखों।
यह सब पशु हैं नर नहीं कोई, देख ले अपनी आँखों॥
गुरु पशु नर पशु त्रिया पशु, वेद पशु संसारा।
मानुष सोई जानिये, जाहे विवेक विचारा॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो, बैल से बच कर रहना।
पक्षपात की सींग अड़ेगी, दुःख क्लेश नहीं सहना॥

अब देखो नां! दुनिया में कितने फ़िसाद होते हैं इसलिए इस मज़हबी दुनिया को साफ़ करने के लिए मैंने 'इन्सान बनो' की आवाज़ उठाई है। क्योंकि ये भी इन्सान बनो का अर्थात् मानव धर्म का प्रचार करते हैं इसलिए इनको कहता हूँ कि प्रचार करना है तो ठीक रास्ते से करो, गांधी जी के पशु मत बनो, फ़कीरचन्द के पशु मत बनो, किसी मज़हब के पशु मत बनो, इन्सानियत के पशु बनो, यह है मेरा भाव आज शब्द निकला था :—

भजन बिन जीवन है निष्फल।

मुझे नहीं पता भजन के क्या मायने हैं सन्तों के,

मैं ने जो समझा वह कहता हूँ। जीवन निष्फल कब होता है? जब हमारा मन किसी बाहर की चीज़ की तरफ दौड़-दौड़ कर उसके हासिल करने की फिक्र, चिन्ता और गम में लगा रहता है वह जीवन का निष्फलपना है, मैंने जो समझा। हम मृगतृष्णा जल के समान अपनी आशाओं के पीछे दौड़ते हैं और इन आशाओं से परे हट कर, अपने आप में ठहर जाना और इस मन की चालों के पीछे न दौड़ना, उसकी फिक्र व गम न करना यह है भजन। परन्तु यहाँ तक पहुँचने के लिए कई मंजिलें हैं। पहले शारीरिक जज़बात को रोकना पड़ेगा। जिस्म के अन्दर जज़बात पैदा होते हैं ना! काम के जज़बात नौजवान बच्चों में पैदा होते हैं। कल एक लड़का मुझे मिला, किसी दोस्त का था, उसको देखा, बीस-इक्कीस साल का था, चेहरा उड़ा हुआ गालें बीच में धँसी हुईं, मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा, बेटा! हथरसी करना छोड़ दे! मेरे मुँह की तरफ़ देखने लगा, मैंने कहा झूठ कहता हूँ? सिर नीचा कर दिया। आप को बताये देता हूँ कि नौजवानों की दुनिया को ठीक करना मुश्किल है (जब तक कि औलाद को औलाद के ख्याल से नहीं पैदा किया जाता) परन्तु इसमें लड़कों का कोई क़सूर नहीं है। माँ-बाप जब बच्चा पेट में होता है भोग करते रहते हैं, मां कामातुर होती है उसका असर उस बच्चे पर पड़ता है, वह बच्चा जब पैदा होगा वक़्त से पहले कामी हो जायेगा और बुरी बातें करेगा, यह है जिस के लिए मैं सिर पीटता हूँ, जिस के सुधार के लिए मैंने यह मुसीबत उठाई है क्योंकि दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। यह जितना क़सूर है सब हमारा अपना (माँ-बाप का) है, अगर किसी का लड़का ख़राब है तो मैं कहूंगा

उसके माँ-बाप ख़राब हैं।

मैंने एक लड़का सन्तान के ख़्याल से पैदा किया, मेरी औरत के दिल में क्या ख़्याल था, मुझे पता नहीं, आज वह बड़ा भारी अफ़सर है, मुझको बचपन से लेकर आज दिन तक, अब तो पचास वर्ष का होने वाला है, बचपन से मौका नहीं मिला कि उसे ओय कहूँ, थप्पड़ मारना तो रहा दरकिनार! यहाँ छुट्टी कभी आता है मेरी रिक्शा पर नहीं चढ़ता मेरा आदमी कहता है बाबू जी! चलो मैं ले चलूँ। नहीं! यह पिताजी की रिक्शा है। मेरा आदमी है भूदेव, उसको खाना मेज़ पर देता है खा लेता है, जब बरतन उठाने लगता है, कहता है नहीं! आप पिता जी के आदमी हैं मेरे जूठे बरतन मत उठाओ। मैं जो कुछ कहता हूँ तजुर्बे के बाद बात कहता हूँ। मैंने भी तो खुदरौ औलाद पैदा की! मैंने भी तो बड़ी टकराँ मारी हुई हैं, ग़लतियाँ खाई हुई हैं, यह नहीं! कि मैंने नहीं खाई!! परन्तु मेरी आँख खुल गई और यह आँख केवल तुम लोगों ने खुलाई केवल इस एक ख़्याल से कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। इसी ख़्याल को पर्दे में रखकर इन्सानी नसल भिन्न-भिन्न मज़हबों व सैक्टरों में बँट गई, कोई देवी का पुजारी, कोई कृष्ण का पुजारी, कोई राम का पुजारी, कोई किसी का पुजारी, कोई किसी का पुजारी, कोई किसी का पुजारी। वृन्दावन में एक फिरका है, 'जय राधा'! यदि उनके सामने 'जय कृष्ण' कहो तो वह लड़ाई करते हैं। एक फिरका है 'जय कृष्ण'! उन के सामने 'जय राधा' कहो तो वह लड़ाई करते हैं। यह दुनिया है क्या? क्यों? क्योंकि विवेक नहीं है, क्योंकि समझ नहीं है! मन की तरंगों में इन्सान बह जाता है। तो मैंने भजन को क्या समझा :—

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

भजन बिन जीवन है निष्फल ।
मृग तृष्णा मरुदल भूमी सारहीन निरजल ॥

यह ! हम क्या करते हैं ? शेखचिल्ली की तरह अपने मन की ख़्याली क़लाबाज़ियाँ, तरह-तरह के ख़्यालात हर वक़्त उठाते रहते हैं, यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे, आशाओं के पीछे फँसे रहते हैं। वह जिस तरह एक शेखचिल्ली की कहानी थी कि कहीं गया, किसी का दो आने के पैसे के लिए अण्डों का टोकरा सिर पर उठा कर ले चला। दिल में सोचने लगा, दो आने मिलेंगे, इसकी मुर्गी लूंगा, उसके अण्डे बेचूंगा, फिर बकरी बनाऊंगा, फिर यह बनाऊंगा, फिर यह बनाऊंगा, फिर शादी करूंगा, फिर लड़के हो जायेंगे (अपने ख़्याल में) वह लड़के आके मुझ से पैसा मांगेंगे, मैं कहूंगा धत् तेरे की मैं नहीं देता। ज्यों ही उसने धत् तेरे की कहा टोकरी नीचे गिर गई, वह दुअन्नी भी गई ! इस तरह से यह दुनिया है।

आज का सत्संग, विशेषकर, मैं इनको करा रहा हूँ, यह रासकुमारी से कहाँ तक फिरते हैं और महात्मा गांधी और विनोबा भावे के अनुयायी हैं। मेरे दोस्त ! एक बात कहूँ तुमको, दर्देदिल से ! जो कुछ कोई कहता है, वह उसके अपने ही ख्यालात के आधार पर कहता है। महात्मा गांधी अहिंसा (Non-Violence) के अनुयायी थे, उन्होंने कहा फौज़ रखने की कोई ज़रूरत नहीं, समझते हो कि नहीं ! यदि यह महात्मा गांधी के कहने पर लगते कि फौज की कोई ज़रूरत नहीं तो भारतवर्ष का सत्यानाश हुआ आ होता ! सोचो मेरी बात को ! उन्होंने अपने ही दिल से सबको ऐसा समझ लिया। इसवास्ते जो कुछ मैं कहता हूँ यह मेरा अपना ही भाव है। परसों मेरे दिल में ख़्याल आया

कि इन हकूमत वालों को लिखूँ कि तुम्हारी मत मारी गई है। एटमबम बनाओ वरना तुम्हारा भारत नहीं रहेगा। फिर मैंने सोचा, कौन सुनेगा! क्या फ़ायदा इनको लिखने का !! दुनिया में हरएक चीज विवेक के साथ होनी चाहिए। एक मौक़े पर हमको लड़ाई करनी पड़ती है, एक मौक़े पर हमको नीवा (विनम्र) होना पड़ता है, यह ग़लत ख्याल है कि हर जगह जोहजूरी, जीहजूरी, जीहजूरी और न ही हर जगह लड़ाई-झगड़ा ही चाहिए। इसवास्ते सन्तों में गुरु की जरूरत को महसूस किया है कि जो कुछ हो वह किसी अपने कामिल इन्सान से जिसको क़ुदरत के राज़ का पता हो उसकी राय ले के चलो। इस वक्त के लिए अपनी समझ से मैंने सन् 1947 में यही आवाज़ उठाई कि इस वक़्त इन्सान बनने की जरूरत **है** :—

काल करम माया बरियाई, फाँसे जीव निरबल।

यह माया अर्थात् अक्ल, बुद्धि, काल, यह सबने हम जीवों को काबू किया हुआ है। माया क्या है? हमारी बुद्धि। इस बुद्धि को साफ़ करने के लिए किसी कामिल इन्सान के सत्संग की ज़रूरत है इसवास्ते गुरु धारण किया जाता है। दुनिया ने यह समझा हुआ है, जाओ, गुरु धारण करो जो कुछ वह कहता है उसको समझो नहीं, उसके हुक्म पर न चलो। हमारे यहाँ भी तो अपने गाँव में गुरु-पुरोहित होते थे परन्तु अब वह प्रणाली बिगड़ गई, बस ;—

संभल संभल कर पग का धरना कहीं न जाना फिसल।

फिसलना क्या है? मन के चक्कर में आ जाना। यह आये हैं, मेरे नाम चूँकि जगत्कल्याण की ड्यूटी थी, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ फ़क़ीरचन्द ! तूने जगत्कल्याण के लिए

क्या किया? मैंने साफ़ कह दिया कि इस असूल के अनुसार जो मैंने पहले बयान किया है कि जब तक इन्सान के अन्तर नफ़रत और द्वेष जो इस वक्त फैला हुआ है यह रहेगा, इसका अंजाम कभी बरबैर नहीं होगा। इसवास्ते मैंने पहले लिखा था कि Present system of election is a sweet poision for the human race अर्थात् वर्तमान चुनाव प्रणाली एक मीठा ज़हर है क्योंकि इसमें नफ़रत द्वेष, बुग़्ज़, हसद और कीना के ख्यालात उठते हैं और यह आसमान को जाते हैं और फिर यह वापिस आकर के देश में तबाही लाते हैं। दूसरे, मैंने जगत्कल्याण के लिए लिखा था, कहे जाता हूँ, बहैसीयत-ए- फ़क़ीर कि जब तक भारत का दार-उल-खिलाफ़ा (राजधानी) दिल्ली है, यह अपना जितना मर्ज़ी चाहे जोर लगा लें, देश में शान्ति नहीं आयेगी, नहीं आयेगी, नहीं आयेगी, नहीं आयेगी ! दुनिया पूछ सकती है, क्यों ? दिल्ली की जगह ऐसी है जहाँ जब से यह बनी है तब से यहाँ जो आदमी राजा रहे इनके आपस में झगड़े रहे। वह जो माद्दा है, वह नष्ट नहीं होता, वह जो ख्यालात हेराफेरी व दुश्मनी के वर्षों से चले आते हैं वह तो ब्रह्माण्ड में मौजूद हैं, जो भी वहाँ हकूमत करेगा उसके दिमाग पर असर करेंगे, वह सही बात सोच ही नहीं सकेगा। क्योंकि ख्याल का मण्डल जिस क़िस्म का होता है, जो आदमी वहाँ जाता हैं वह उसके असर से बच नहीं सकता, कोई शायद सन्त बचे तो बचे अन्यथा कोई बच नहीं सकता। मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूँ। दूसरे, जब तक संसार से यह मज़हबी मनाफ़रत नहीं जाती, तब तक यह जो मर्जी चाहे कर लें मुल्की शान्ति नहीं मिल सकती। घरेलू शान्ति—सन्तान को सन्तान के

ख्याल से पैदा करो, घरों में शान्ति रखो। जिस घर में कलह है वहाँ कभी सुख नहीं, मेरे पास रोज़ केस आते हैं :—

जिस घर कलह कलन्त्र वस्से,
उस घर घड़यों पानी नस्से।

चौथे विषय-विकार को कम करो। औरतें सिर्फ़ बच्चे पैदा करने के लिए हैं; हम लोगों ने इनको एक विलासिता का सामान समझा है और औरतों ने मर्दों को विलासिता का सामान समझा है, इसवास्ते देश में तबाही आयेगी, मेरे जैसे फ़कीर बहुतेरे उपदेश दे जायें, लोगों को नसीहत करते जायें मगर होनी वही है जो हमारे कर्म हैं। हमारे कर्म इस वक़्त घरेलू और मुल्की अच्छे नहीं हैं, कभी शान्ति और सुख की हम नींद नहीं ले सकते। मेरे तजुर्बे में यह बात आई है, समझ गये मैंने क्या कहा आपको ! मेरी बात सुन रहे हैं !! गांधीपशु मत बनो, विनोबा भावेपशु मत बनो, फ़कीरपशु मत बनो, विवेकपशु बनो, समझपशु बनो। इन के जिन्दगियों के तजुर्बात अलग-अलग होते हैं, यह नहीं ! कि महात्मा गांधी सन्त थे, मैं नहीं मानता, महात्मा गांधी was a father of the nation in political line, रूहानी दुनिया में वह कोरे थे और जो कुछ भी उन्होंने हासिल किया यदि वह सच्चे होते तो देश की तबाही न होती, Partition न होती। बात सच्ची कहता हूँ मैं, ड़रता नहीं दुनिया से, जो सच्चाई है वह सच्चाई है। यह नहीं ! कि मैं महात्मा गांधी की इज्ज़त नहीं करता हूँ, इज्ज़त करता हूँ, मगर मैं उनको सन्त नहीं मानता।

आप आये, अच्छा किया, मैंने आपको सत्संग बता दिया, अपने views दे दिये। अब रह गया यह कि हम लोग गुरुओं के पास जाते हैं कहते हैं हमें कुछ मिले, दया करें

गुरु। अरे! गुरु की दया क्या है, दुनिया के दीवानो! गुरु ज्ञान देता है, समझ देता है, विवेक देता है, सीधा रास्ता बताता है, एक तो दया उसकी यह है। दूसरे, उसका हित शुभ भावना करती है। जिस तरह मां है, बच्चा होता है वह चाहती है बच्चा बड़ा हो जाय, लायक बन जाय, यह हो जाय, वह हो जाय! इस तरह का यदि जज़्बा किसी गुरु में किसी के लिए है तो वह गुरु है। आप आये थे मैंने आपको कहा था परसों आना, पहले तो मुझे पता नहीं लगा कि आप बैठे हुए हैं वरना मैं शुरू से ही कुछ और start करता। जब मैंने देखा तो फिर मैंने ख्यालात को बदल दिया। जाओ काम करो, सबसे पहले खुद इन्सान बनो। अगर गांधीपशु बने रहोगे या विनोबापशु बने रहोगे तो यह गलत है, हाँ! उनकी Quotation दे सकते हो, यह ठीक है परन्तु पशु नहीं बनना! मैंने जैसे कहा कि गांधी जी के पशु जो हैं यह Military न रखें क्योंकि गांधी जी ने कहा है कि भई! Military नहीं रखनी। अगर ऐसा करोगे तो फिर मारे जाओगे, गाँधीपशु तुमको खा जायेगा! जमाने और हालात के मुताबिक काम करना चाहिए, समय-समय पर जैसा वक्त आये वैसा बदलो तब फायदा होगा। लकीर के फ़कीर नहीं होना चाहिए, आदमी को, हालात और वाक्यात के मुताबिक इस वक़्त जिस चीज की जरूरत है वह करनी चाहिए। अगर मैं प्रधानमन्त्री होता तो Democracy छोड़ देता, Dictatorship चाहिए भारत में। बगैर dictatorship के :—

भय बिन प्रीत न होई।

ये लोग हड़तालें करते हैं, क्या ये इन्सान के बच्चे

हैं ! देश का सत्यानाश करते हैं, गाड़ियाँ जलाते हैं, बसें जलाते हैं परन्तु वह उनका क्या क़सूर है। वे खुदरौ औलाद हैं । उनका क़सूर नहीं है क़सूर मां-बाप का अपना है ।

यह मैंने आपको समझाने के लिए इस तरह की बातें की हैं। अगर आप मानवता का प्रचार करना चाहते हैं तो मेरा ख़्याल यह है जो मैंने ब्यान किया । बाकी यह है कि जो कर्म में तेरे लिखा है तूने भोगना है, जो मेरे लिखा है वह मैंने भोगना है, जिस काम के लिए तू आया है तू करेगा, जिस काम के लिए मैं आया हूँ मैं करूंगा, उपदेश मैं भी बहुतेरा करता हूँ मानवता के लिए ।

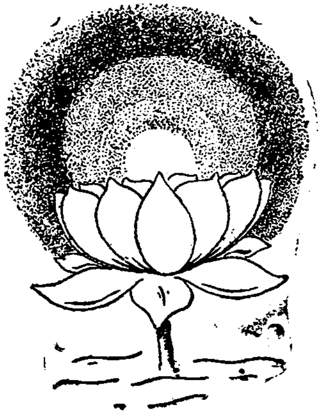

ही चलता है । शरणागत की अवस्था क्या होती है? शरणागत की अवस्था या हालत, वह सरल से सरल रास्ता है, जिसे भक्तिमार्ग कहते हैं। यह हालत तभी आती है जब एक साधक का झूठा अहंकार खत्म हो जाता है और 'मैं' मिट जाती है। "मैं" मिटते ही मालिक की शक्ति साधक में फ़ौरन आ जाती है और उसके लौकिक तथा पारलौकिक सभी काम बन जाते हैं। साधक की 'मैं' मालिक की 'मैं' बन जाती है। यह है शरणागत की हालत। भक्ति का रास्ता बहुत सरल है और इस रास्ते में भक्त को अहंकार नहीं होता। बस, आज इतना ही काफी है। मैं सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप सदा सुखी रहें तथा रूहानियत में आगे बढ़ते चले जायें।

—※—

मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो :

राधास्वामी, परमदयाल जो सहाई !

मालिक की अपार कृपा से मेरा स्वास्थ्य तो अब काफी ठीक हो गया है फिर भी मेरे प्यारे डाक्टर यही कहते हैं कि मुझे भारत जाने से पहले काफी आराम की ज़रूरत है। मैं भी ऐसा महसूस करता हूँ कि पिछले दो वर्षों में भारत के सत्संगों के दौरा पर मैंने अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दिया। जब-२ भी मैं भारत में दौरे पर गया मुझे कुछ न कुछ तकलीफ़ होती रही। इसमें तनिक मात्र भी सन्देह नहीं कि आपकी श्रद्धा तथा प्रेम का पारावार नहीं है। मैं भी आपसे सच्चे दिल से प्यार करता हूँ

और चाहता हूँ कि हर वर्ष, हर मानवता केन्द्र पर आपकी अधिक से अधिक रूहानियत की सेवा कर सकूँ। जितना मेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा मैं उतना ही अधिक समय आपको दे सकूंगा।

यहाँ पर आराम करने से मेरा स्वास्थ्य काफी अच्छा हो गया है और उसके साथ ही साथ मानव मन्दिर के लिए लिखने का समय भी मिल गया है। मेरे परमगुरु परमदयाल जी महाराज की यह प्रबल इच्छा थी कि उनके साहित्य को विश्व के कोने-२ में फैलाया जाय, क्योंकि जिन मुसीबतों से आज मानव-जाति गुजर रही है, उनसे बचने का एक मात्र उपाय मानवता या सत्यता के धर्म को अपनाना है। मानवता ही मनुष्य को सच्चा इन्सान बनाकर उसके जीवन में सुख का संचार कर सकती है और मानवता ही उसे रूहानी शान्ति दे कर 'सुरत-शब्द' योग के जरिए परमधाम या राधास्वामी धाम तक पहुँचा सकती है। यहाँ पर, परम-दयाल जी महाराज के अनुभव पर आधारित इस सच्चाई को नहीं भुल जाना चाहिए कि 'राधास्वामी' किसी फ़िरके या किसी व्यक्तिविशेष का नाम नहीं है। 'राधास्वामी' रूहानियत की वह हालत है जिसे पाकर मनुष्य को पूर्णता मिल जाती है। इसी पूर्णता की हालत को ऋषियों ने जीवन्मुक्ति कहा है। यह बात सही है कि यदि हम राधा-स्वामी नाम के अर्थ को समझ कर सुमिरन, ध्यान और भजन करें, तो हम 'राधास्वामी' नाम के ज़रिए उस अशब्द गति पर पहुँच सकते हैं, जहाँ पर सभी नाम और रूप समाप्त हो जाते हैं। इसी कारण उस ऊँची अवस्था को 'अनामी धाम' भी कहा गया है। भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने इस अवस्था को 'परमधाम' कहा है। मैं, यह सब इस बात को स्पष्ट करने के लिए या आपको समझाने के

लिए लिख रहा हूं कि राधास्वामी मत या सन्तमत एक व्यापक दृष्टिकोण है, जो किसी भी दूसरे फ़िरके या मत का खण्डन नहीं करता।

दाता दयाल जी महाराज ने हज़ारों पुस्तकें लिखकर यह स्पष्ट किया है कि 'राधास्वामी मत' कोई नया मत नहीं है, उसको तो केवल नये ढंग से पेश किया गया है। उन्होंने तो इतना तक भी कह दिया था कि अद्वैत वेदान्त को जाने बिना, सन्तमत की सच्चाई का पता नहीं चल सकता। इसी तरह सुरत-शब्द योग के ज़रिए अपने आप का अनुभव किए बिना वेदान्ती कोरे का कोरा रह जाता है। दूसरे शब्दों में, वेदान्त के ज्ञान के बिना, अभ्यासी अन्धविश्वासी बन जाता है और अन्दर के अनुभव के बिना वेदान्ती कोरा वाचक ज्ञानी ही बना रहता है। परमदयाल जी महाराज ने ज्ञान और अभ्यास को मिला दिया है और वह ही एक मात्र सन्त हैं, जिन्होंने कहा है कि अन्त में तो राधास्वामी नाम से भी परे जाना पड़ता है। मेरे प्यारो! मैं आपको यह सब बार-२ इसलिए बताता हूँ कि आप चाहे पन्थाई हों, चाहे सनातनी हों, बौद्ध हों, ईसाई हों, सिक्ख हों, मुसलमान हों या आर्य समाजी हों, आपको कट्टरवादी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक धर्म या मत में एक ही सच्चाई छुपी हुई है। इसलिए ही परमदयाल जी महाराज ने सभी धर्मों की सच्चाई को मानते हुए फ़िरकेबाजी से बचाने के लिए मानव जाति के लिए इस धर्म का नाम मानवता धर्म रखा है। जिन्होंने परमदयाल जी महाराज के सत्संग सुने हैं और उनके दर्शन किये हैं, उन्हें कभी भी कट्टरवादी नहीं होना चाहिए।

मेरे प्यारे सत्संगियो! मैं परमदयाल जी की हिदायत के मुताबिक हो सत्संग देने और लिखने का काम कर रहा

हूँ। उन्होंने मुझे अनेकों बार लिखा था और कहा भी था "तुम पति-पत्नी दोनों परमार्थ में लग जाओ।" १९८० में उन्होंने हम दोनों को पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करने की आज्ञा दी और कहा कि अब से हमें अपना सारा समय रूहानियत को फैलाने में लगा देना चाहिए। मुझे बहुत खुशी है कि मेरी जीवन-संगिनी तथा परमदयाल जी की प्रिय पुत्री भाग्य ने इस कर्त्तव्य को निभाने के लिए पूरा-२ सहयोग ही नहीं दिया, बल्कि आशा से अधिक कुर्बानी देकर परमदयाल जी की आज्ञा का पालन करने में मुझे नैतिक और आत्मिक-बल दिया है। सन्तों की जीवनी में जीती-जागती मिसाल परमहंस रामकृष्ण जी की पत्नी शारदा माता में मिलती है। शारदा माता जीवन भर परमहंस जी के साथ रहीं और उन्होंने अपने आप को जगत् माता प्रमाणित किया। इसलिए मैं १९८० से ही परमदयाल जी की पुत्री भाग्य को माता के रूप में देखता हूँ। मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ कि परमदयाल जी महाराज की कृपा से ही हमारा यह रूहानियत प्रयोग सफल हो रहा है। मेरे जीवन में कोई भी ऐसी बात नहीं जो गुप्त हो या छुपी हुई हो। मुझे यह देख कर खुशी होती है कि मेरे प्यारे सत्संगी मेरे इस स्वभाव को तथा माता भाग्य की सेवा को अच्छी तरह से जानते हैं। भाग्य जहाँ पर भी सत्संग के दौरे पर जाती है सदा अपने खर्चे पर जाती है और सभी सत्संगी उनसे मिलकर और बातचीत करके आनन्द प्राप्त करते हैं। जब कभी वह दौरे पर मेरे साथ नहीं होती तो भावुक सत्संगी पूछते हैं कि माताजी क्यों नहीं आईं। यहाँ पर मैं यह भी बतला देना चाहता हूँ कि हम दोनों अपने गुरु की आज्ञा का पालन कर रहे हैं, आप पर या किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे। गुरु की आज्ञा का पालन

की वजह से मैं १० मई तक कहीं भी नहीं जा सका। क्लीवलैण्ड में केवल एक ही दिन श्री राज खन्ना के घर पर अमरीकन सत्संगियों के लिए एक सत्संग का आयोजन किया गया। इस सत्संग में सुरत-शब्द योग की व्याख्या की गई, जिससे सभी सत्संगियों को काफी लाभ पहुँचा। ११ मई को मैं और माता जी श्री नन्द सिहरा के पास हेमिल्टन, कैनेडा में उनकी सुपुत्री के विवाह में सम्मिलित होने के लिए गये और १५ मई को क्लीवलैण्ड पहुँच गये। सत्संग का अगला प्रोग्राम रविवार २० मई को न्यूजर्सी के सत्संगी श्री एस० लाल ने आयोजित किया है। इसके पश्चात २८ मई से लेकर ७ जून तक फ्लोरिडा में अमरीकी सत्संगियों का कार्य-क्रम चलेगा। ९ जून से १७ जून तक श्री अजीत कुमार के घर ग्रीनबे विस्काउन्सन में भारतीय तथा अमरीकी सत्संगियों के लिए दो या तीन सत्संग होंगे। २४ जून से २९ जून तक ए० आर० ई० वर्जीनिया बीच, वर्जीनिया में अमरीकी सत्संगियों के लिए व्यवस्थित प्रोग्राम है। ३० जून और पहली जुलाई को मेरीलैण्ड में सत्संग होगा। ४ जुलाई १९८४ को हम न्यूयार्क से रवाना होकर ६ जुलाई १९८४ को रात के साढ़े ग्यारह बजे, (हम) देहली पहुँच जायेंगे। इस बार, मेरी बीमारी के कारण, मैं कम जगह पर सत्संग दे सका हूँ।

मेरे प्यारे सत्संगियो! पिछले मासिक सन्देश में 'सुरत-शब्द योग' के महायज्ञ के पहले सोपान 'सत्संग' की व्याख्या की गई थी। इसमें सन्देह नहीं कि सन्तमत की सबसे बड़ी देन सत्संग की परम्परा है। सत्संग से एक ऐसा वातावरण पैदा हो जाता है, जिसमें सत्संगियों के संस्कार बदल जाते हैं। आजकल का मनोविज्ञान भी इसी बात पर ज़ोर देता है कि व्यक्ति के मानसिक विकास पर, वातावरण का सबसे अधिक असर पड़ता है। इसमें कोई शक नहीं कि पूर्वजन्मों के संस्कारों के कारण, मनुष्य का रुझान एक ख़ास दिशा में होता है। अनेक जन्मों के शुभ कर्मों के कारण

ही एक व्यक्ति सत्संगी बनता है। परन्तु सत्संग मनुष्य की, गुप्त पूर्णता को उभार देता है। मनुष्य की छुपी हुई शक्तियाँ सत्संग के प्रभाव से पनप जाती हैं। सन्त तुलसीदास जी ने इसी विचार को इस प्रकार व्यक्त किया है :—

जलचर, थलचर, नभचर नाना, जे जड़ चेतन जीव जहाना।
मति की रति,गति भूति भलाई, जब जेहि जतन जहां ते पाई॥
सो जानब सत्संग प्रभाऊ, लोकहू वेद न आन उपाऊ।
सब ही सुलभ सब दिन सब देसा, सेवत सादर समन कलेसा॥

अर्थात् सत्संग का प्रभाव जड़, चेतन, जल में रहने वाले, पृथ्वी पर चलने वाले तथा आकाश में उड़ने वाले सभी जीव-जन्तुओं पर पड़ता है। जीवों के सभी गुण सत्संग के प्रभाव से ही पनपते हैं, चाहे कोई व्यक्ति अच्छी मति वाला हो, अच्छी कीर्ति वाला हो, अच्छी गति वाला हो, अच्छे भविष्य वाला हो और भलाई करने वाला हो। उसके ये सभी गुण चाहे किसी भी यत्न से और कहीं से भी प्राप्त हुए हों, असल में सत्संग के कारण ही पनपते हैं। इन गुणों पर चलने वाले जीव जानते हैं कि सत्संग का क्या प्रभाव होता है। असलियत तो यह है कि इस संसार में गुणों को पनपाने के लिए सत्संग के बिना कोई दूसरा उपाय नहीं है। यह सत्संग हर एक व्यक्ति के लिए और हर समय आसानी से मिल सकता है। जो व्यक्ति सत्संग को आदर और सत्कार से अपनाता है उसके सभी दुःख और क्लेश दूर हो जाते हैं।

स्वामीजी महाराज ने सत्संग के सम्बन्ध में कहा है कि सच्चा सत्संगी वही है जो सत्संग में आकर पूरे ध्यान से गुरु के वचनों को सुनकर, उनके सार को समझ कर उस को जीवन में उतारता है। इन असूलों पर चलने से ही सत्संगी को अभयदान मिल जाता है। स्वामीजी के इस विचार को 'सार वचन' में इस प्रकार दिया गया है :—

दर्शन करे, पुनि वचन सुने, सुन-२ कर मन में गुने।
गुन-२ कर काढ ले सारा, काढ सार तिस करे अहारा॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गया नसाई॥

अर्थात् सत्संग में आकर पहले सद्गुरु के दर्शन करे, फिर

उनके वचनों को ध्यान से सुने, सुनने के बाद उन पर विचार करे और उसके सार को समझे। उस सार को अपने जीवन में उतारे यानि कि उस पर अमल करे। गुरु के वचनों पर अमल करने से सत्संगी को अपने आपे (स्वयं) का ज्ञान हो जायेगा कि उसका असली रूप न शरीर है, न मन है, न आत्मा है बल्कि अविनाशी तत्व है। इस ज्ञान के हो जाने से ही वह नाशवान् जगत् से ऊपर उठ कर निर्भय जीवन गुजार सकता है।

सत्संग का यह प्रभाव सत्संगी और सद्गुरु के सम्पर्क से ही होता है। एक तो बाहरी सद्गुरु होता है, जिसे ज्ञान दाता कहा जाता है। दूसरा अन्दरूनी सद्गुरु होता है, जो अविनाशी का अंश होता है और जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर मौजूद है। ज्ञानदाता सद्गुरु अपने वचनों से सत्संगी को ऐसा सच्चा ज्ञान देता है, जिससे उसका मोह और अज्ञान दूर हो जाता है और सत्संगी जीवन्मुक्त हो जाता है। सद्गुरुरूपी, सुरत-शब्द योग रूपी महायज्ञ के दूसरे सोपान की व्याख्या अगले मासिक सन्देश में जारी रखी जायेगी। मेरी यह आशा है कि आप इस मासिक सन्देश में दिये गये विचारों पर अमल करेंगे और धीरे-२ रूहानियत में आगे बढ़ेंगे। यहाँ पर धीरे-२ शब्दों का प्रयोग इसलिए किया गया है कि सन्तमत एवं मानवता धर्म किसी भी काम को जल्दी में करने की मति नहीं देता। सुरत-शब्द योग की यही ख़ासियत है कि वह सहज में राम से मिला देता है। इस योग को बच्चा, बूढ़ा, जवान सभी आसानी से अपना, सकते हैं।

इन शब्दों के साथ मैं आप को सुदूर देश से सद्भावना भेजता हूँ और सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप इस महीने सुख और आनन्द का अनुभव करते हुए और शुभ-संकल्प के असूल पर चलते हुए रूहानियत में तरक्की करें।

आपका फ़कीरमय
मानव

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
अलख अगम और अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया ।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर ।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम ।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम ।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार ।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।
दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम ।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी ।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
15-7-84 को होगा ।

अति आवश्यक सूचना

मुझे अमरीका में जिन लोगों ने पत्र लिखें हैं और मैं उत्तर नहीं दे सका मैं उन से क्षमा चाहता हूँ और अपनी आशीर्वाद देता हूँ ।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

JULY 10th 1984
NWHSP—7

ADDRESS

To

934 Sh. Chiver Narsimulu
Muneem
P. O. & Tq Banswada
Distt. Nizamabad A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)